

---

# Shri Krishnanamashtakam

---

## श्रीकृष्णनामाष्टकम्

---

### Document Information

---

Text title : kRRiShNanAmAShTakam

File name : kRRiShNanAmAShTakam.itx

Category : vishhnu, krishna, rUpagovAmin, stavamAlA, aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Author : Rupagoswami

Transliterated by : Jan Brzezinski (Jagadananda Das) jankbrz at yahoo.com and Neal Delmonico (Nitai Das) ndelmonico at sbcglobal.net

Description/comments : From stavamAlA (rUpagovAmivirachitA) Garland of Devotional Prayers stavamAlA

Acknowledge-Permission: <http://granthamandira.net> Gaudiya Grantha Mandira

Latest update : February 22, 2019

Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीकृष्णनामाष्टकम्



निखिलश्रुतिमौलिरत्नमाला

द्युतिनीराजितपादपङ्कजान्त ।

अयि मुक्तकुलैरुपास्यमानं

परितस्त्वां हरिनाम संश्रयामि ॥ १ ॥

जय नामधेय मुनिवृन्दगेय हे

जनरञ्जनाय परमाक्षराकृते ।

त्वमनादरादपि मनाग् उदीरितं

निखिलोग्रतापपटलीं विलुम्पसि ॥ २ ॥

यदाभासोऽप्युद्यन् कवलितभवध्वान्तविभवो

दृशं तत्त्वान्धानामपि दिशति भक्तिप्रणयिनीम् ।

जनस्तस्योदात्तं जगति भगवन्नामतरणे

कृती ते निर्वक्तुं क इह महिमानं प्रभवति ॥ ३ ॥

यद् ब्रह्मसाक्षात्कृतिनिष्ठयापि

विनाशमायाति विना न भोगैः ।

अपैति नाम स्फुरणेन तत् ते

प्रारब्धकर्मेति विरौति वेदः ॥ ४ ॥

अघदमनयशोदानन्दनौ नन्दसूनो

कमलनयनगोपीचन्द्रवृन्दावनेन्द्राः ।

प्रणतकरुणकृष्णावित्यनेकस्वरूपे

त्वयि मम रतिरुच्चैर्वर्धतां नामधेय ॥ ५ ॥

वान्द्यो वाचकमित्युदेति भवतो नाम स्वरूपद्वयं

पूर्वस्मात् परमेव हन्त करुणा तत्रापि जानीमहे ।

यस्तस्मिन् विहितापराधनिवहः प्राणी समन्ताद् भवेद्

आस्येनेदमुपास्य सोऽपि हि सदानन्दाम्बुधौ मज्जति ॥ ६ ॥

सूदिताश्रितजनार्तिराशये

रम्यचिद्धनसुखस्वरूपिणे ।

नाम गोकुलमहोत्सवाय ते


कृष्णपूर्णवपुषे नमो नमः ॥ ७ ॥

नारदवीणोज्जीवनसुधोर्मिनिर्यासमाधुरीपूर ।


त्वं कृष्णनाम कामं स्फुर मे रसने रसेन सदा ॥ ८ ॥

इति श्रीरूपगोस्वामिविरचितस्तवमालायां श्रीनामाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Shri Krishnanamashtakam*

pdf was typeset on November 25, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

